अपोलोमेडिक्स हॉस्पिटल लखनऊ ने शुरू किया कॉम्प्रिहेंसिव लीवर डिजीज क्लिनिक

अब यूपी और नजदीकी राज्यों के लीवर मरीजों के लिए भरोसेमंद मार्गदर्शन

प्रहरी मीमांसा संवाददाता

लखनऊ। अपोलोमेडिक्स सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल, लखनऊ ने लीवर ट्रांसप्लांट और हेपेटो-पैंक्रिएटो-बिलियरी (एचपीबी) सर्जरी के लिए एक विशेष कॉम्प्रिहेंसिव लीवर डिजीज क्लिनिक की शुरुआत की है। इस क्लिनिक में लिवर ट्रांसप्लांट टीम के रूप में शामिल हैं- डॉ. अभिषेक यादव, सीनियर डायरेक्टर और एचओडी- लीवर ट्रांसप्लांट एवं एचपीबी सर्जरी; डॉ. राजीव रंजन सिंह, डायरेक्टर गैस्ट्रोएंटरोलॉजी; डॉ. जयेन्द्र शुक्ला, कंसल्टेंट गैस्ट्रोएंटरोलॉजी; और डॉ. उत्कर्ष श्रीवास्तव, कंसल्टेंट लीवर ट्रांसप्लांट एवं गैस्ट्रो सर्जन। अत्यंत कुशल डॉक्टर्स की टीम के निर्देशन में चलने वाली यह क्लीनिक गंभीर लीवर रोग और जटिल सर्जिकल निर्णयों के मामलों में मरीजों और उनके परिवारों के लिए भरोसेमंद मार्गदर्शन प्रदान करेगा।

इस क्लिनिक की शुरुआत करते हुए डॉ. अभिषेक यादव, सीनियर डायरेक्टर व हेड -लीवर ट्रांसप्लांट एवं एचपीबी सर्जरी, ने कहा, भारत में हर साल 2.5 से 3 लाख लोग लीवर रोग और लीवर सिरोसिस के कारण अपनी जान गंवा देते हैं। लीवर रोग अब भारत में मृत्यु का 8वां सबसे आम कारण बन चुका है, जबकि 10 साल पहले यह 10वें स्थान पर था। भारत में सालाना केवल 2500-3000 लीवर ट्रांसप्लांट ही होते हैं, जो कि वास्तविक ज़रूरत का केवल 1-2 फीसदी ही है। फैटी लीवर डिजीज तेजी से बढ़ रही है और भारत की 30-35 फीसदी आबादी इससे प्रभावित है, कुछ क्षेत्रों में यह संख्या 50 फीसदी तक पहुँच चुकी है।

उत्तर प्रदेश की आबादी जो कि भारत की लगभग 17 फीसदी आबादी का हिस्सा है, में करीब 50,000-60,000 लोग हर साल लीवर रोगों के कारण मौत के मुंह में चले जाते हैं, लेकिन केवल 200-250 लीवर ट्रांसप्लांट ही सालाना हो पाते हैं और ये ज्यादातर एनसीआर क्षेत्र में होते हैं। पूरे राज्य में केवल चार लीवर ट्रांसप्लांट सेंटर हैं, जबकि तमिलनाडु में 42, महाराष्ट्र में 36, दिल्ली एनसीआर में 35, कर्नाटक में 25 और केरल में 19 सेंटर हैं। ऐसे में ज्यादातर मरीजों को अन्य राज्यों का रुख करना पड़ता है, जिससे इलाज की लागत बढ़ जाती है और पोस्ट-ट्रांसप्लांट फॉलो-अप कठिन हो जाता है।